RNI No.: DEL/BIL/2004/14598

Youngster

Where dream Chisels into reality

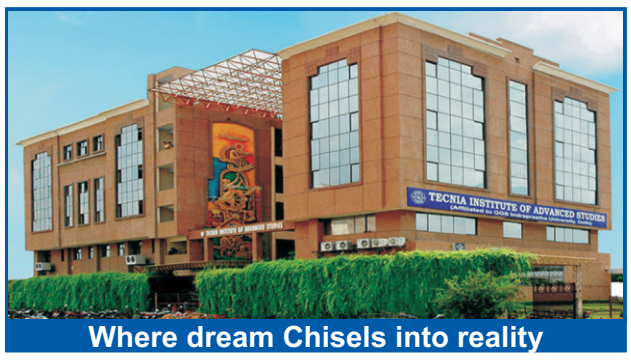

YOUNGSTER · ESTABLISHED 2004 · NEW DELHI · MARCH 2022 · PAGES 4 · PRICE 1/- · MONTHLY BILINGUAL (HIN./ENG.)

बेहाल बंगाल की राजनीति

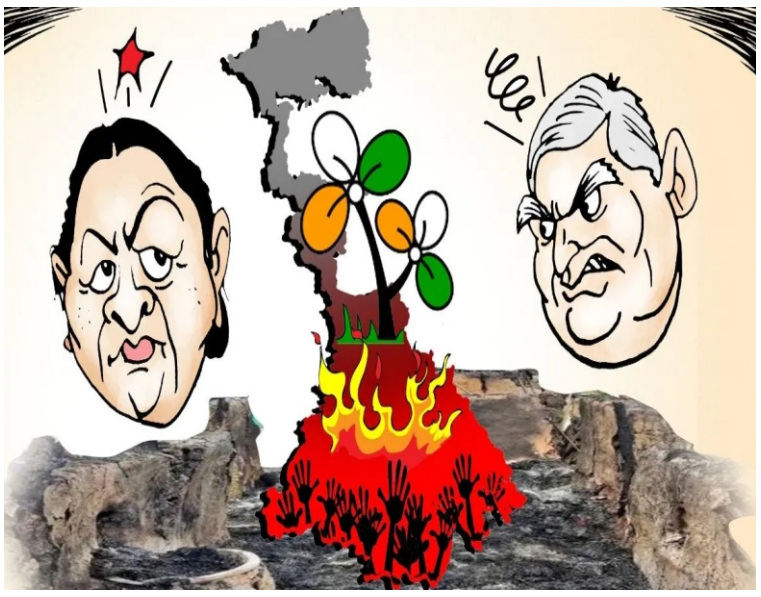

अभी बंगाल चुनाव के पूर्व हुई हिंसा के ज़ख्म भरने बाकि ही थे, कि बंगाल के बीरभूम से मानवता को वीभत्स करने वाली एक और घटना समाने आ गई, जहां टीएमसी नेता भादूशेख़ की हत्या के बाद देर रात भड़की हिंसा में उग्र भीड़ ने कई घरों को आग की लपटों में ढकेल दिया। वहीं बंगाल विधानसभा के दौरान सत्ता पक्ष और विपक्ष के विधायकों के बीच हुई हिंसक झ ़प, राज्य सरकार की मंशा पर कड़े सवाल खड़ा कर रही है। विधानसभा से आई तस्वीरे साफ–साफ बयान कर रही है कि ममता सरकार बीरभूम की दिल–दहला देने वाली घटना पर चर्चा को तैयार नहीं थी। या ये भी किसी से छिपा नहीं कि राज्य सरकार द्वारा इस घटना को सीबीआई जांच से दूर रखने के लिए ऐड़ी–चोटी का ज़ोर लगाया गया था। हालांकि कोलकाता हाईकोर्ट घटना की गंभीरता को समझते हुए मामला सीबीआई को सौंप दिया है। एनसीआरबी 2018 के एक डेटा अनुसार बंगाल राजनैतिक हत्याओं के मामले में पहला पायदान हासिल किया हुआ है। वही पिछले सात दिनों में तकरीबन छब्बीस मौतें हो चुकी है। झुग्गी–झोपड़ियों से ज़िदा बम व बारूद मिलन, पोल व पेड़ पर लटके हुए शव जैसी तस्वीरें इन तमाम आकड़ों को चीख़–चीख़कर सही साबित कर रही है। किसी भी राज्य की विकासयात्रा का एक पहियां वहां की सुरक्षा व्यवस्था पर

टीकी होती है, जिसका जिम्मा राज्य की पुलिस व्यवस्था पर होती है। जून 2021 के उतर परगना का मामला, जहां भाजपा कार्यकर्ता को बम से उड़ा दिया गया था, मई 2021 के मालदा की घटना, जहां दो भाई के शव पेड़ से लटके मिले, जुलाई 2021 का मामला, जहां हाईवे पर मिले शव पर ममता बैर्नजी के भतीजे को थप्पड़ मारने का आरोप था और अब बीरभूम कांड जैसे कई अन्य मामले है, जहां बंगाल पुलिस का आरोपी के प्रति लचीला–पन खैया उन्हें सवालों के कटघरें में एकबार फिर ख़ड़ा कर रहा है। ये विडंबना है कि एक तरफ जहां ममा बैर्नजी हाथरस, उन्नाव व लख़ीमपुर जैसी घटनाओं पर सरकार को कोसने से नहीं चूकती नहीं वहीं स्वयं के राज्य में सुरक्षा–व्यवस्था को तार–तार कर देने वाली तस्वीरों पर संवेदना के बजाय धमकाना ज़्यादा मुनासिफ समझती है अब ये सवाल खड़ा होता है कि भारतीय राजनीति दोहरे मापढंडों से आख़िरि कब तक ग्रसीत रहेगी ? सवाल तो केंद्र की भूमिका पर भी है कि क्या गृह मंत्रालय केवल संवेदना व्यक्त करने के लिए है ? इस तरह की तमाम घटनाएं राज्य में घटने की बजाय लगातार बढ़ती ही जा रही है। ऐसी घटनाएं न केवल लोकतंत्र को शर्मिंदा करती है, बल्कि राजनैतिक दलों के बीच खट्टास भी पैदा करती है, जिसका असर समाज पर पड़ता है। बंगाल का राजनैतिक वातावरण लगातार ज़हरीला होता जा रहा है। इसलिए इसका तुरंत रूकना अति आवश्यक है।

– अन्नया श्रीवास्तव, बीएजेएमसी, प्रथम वर्ष

International Women's Day celebrated at Tecnia Institute of Advanced Studies

The students of NSS cell Tecnia Institute of Advanced Studies in association with MRIDANG Theatre organized Nukkad Natak on "Beti Bachao, Beti Padhao" on International Women's Dayto highlight the importance of a girl child and women empowerment. The programme started with welcome remarks by Ms. Vaishali Prasad, Nodal Officer-NSS. She has discussed about "Beti Bachao, Beti Padhao" scheme which was started on January 22, 2015 as a joint initiative of the Ministry of Women and Child Development, Ministry of Health and Family Welfare and Ministry of Human Resource Development under coordinated and convergent efforts to empower the girl child. "Nukkad Natak (street Play) was performed by students at college auditorium. Through Street Play, Students have shared a strong social message to stop the discrimination of the girl child. The due importance was given on ensuring the survival and protection of girl.

The programme was concluded with a Vote of thanks by Dr. Ajay Kumar, Director, TIAS and ACP Delhi Police.

- Youngster Bureau

सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार से सम्मानित "कोडा"

कोई राग कैसे समझ सकता है जब वे इसे बिल्कुल भी नहीं सुन सकते?
कोई ऐसे सपने को कैसे समझ सकता है जिसे वे समझने में असमर्थ हो?
"कोडा" एक किशोर लड़की के जीवन को उसकी चलती और प्रेरक यात्रा के माध्यम से इन सवालों की खोज करते हुए उजागर करता है। मूक–बधिरों की दिल छू लेने वाली कहानी दिखाने वाली "कोडा" को सर्वश्रेष्ठ फिल्म का सम्मान मिला है।
खास बात यह है कि इस फिल्म को स्टैंडिंग ओवेशन तक मिली है।
ये फिल्म फांसीसी फीचर फिल्म "ला फैमिले बेलियर" की रीमेक है। निर्देशक सियान हेडर एक भावनात्मक लेकिन मनोरंजन यात्रा बुनते हैं जो दर्शकों को भावनाओं की एक रोलरकोस्टर सवारी के माध्यम से ले जाएगी।

कोडा के कलाकारों के कुछ प्रमुख कारण यह हैं कि इस फिल्म के कलाकारों में कई बधिर कलाकार मुख्य भूमिकाओं में हैं और यह प्रतिनिधित्व के मामले में एक बड़ा कदम है।
हाल के वर्षों में ऑस्कर की विविधता और समावेश की कमी के लिए भी आलोचना की गई है, और क्योंकि कोडा के प्रतिनिधित्व को इतनी खूबसूरती से संभाला गया है कि यह एक और कारण है कि इसने सर्वश्रेष्ठ फिल्म जीता।
यह फिल्म क्रांति, जुनून, परिवार और दोस्ती की फिल्म है। यह हमें बधिर लोगों को हर दिन सामना करने वाली कठिनाई को दिखाता है। संगीत के टुकड़े परिपूर्ण हैं, और फिल्म में गति और लय है। संगीत फिल्म का केंद्र बिंदु है। अभिनेताओं द्वारा दिया गया प्रदर्शन अविश्वसनीय है और फिल्म को और अधिक आकर्षक

बनाता है। इस फिल्म के अभिनेता ट्राय कोटसर जन्म से ही बधिर हैं और ऑस्कर पाने वाले दुसरे बधिर कलाकार बन गए हैं। कोडा को एप्पल टीवी प्लस ने बनाया है। यह किसी स्ट्रीमिंग सर्विस की बनाई पहली फिल्म है, जिसे ऑस्कर मिली है।
अमेरिकी संस्कृति में बधिर संस्कृति और मुद्दे अधिक प्रमुख होते जा रहे हैं। कोडा वास्तविक जीवन के अनुभवों के प्रति सच्चे होकर अपने पूर्ववर्ती के प्रभाव को बेहतर दिशा में ले जाता है।

—आकांक्षा राय, प्रथम वर्ष, बीएजेएमसी

छोटी सी मुसीबत से घबरा जाए, वह अनाड़ी होता है

छोटी सी मुसीबत से घबरा जाए, वह अनाड़ी होता है। हर को सामने देखकर जो लड़ जाए, वह खिलाड़ी होता है। तो हम बात कर रहे थे उसैन बोल्ट की जी हां, वह एक महान खिलाड़ी है। उनका जन्म 21 अगस्त 1986 को जमैका में हुआ था। भले ही 2017 में उसैन बोल्ट ने रनिंग से निवृत्ति ले लिए हैं पर वह आज भी दुनिया का सबसे तेज धावक है। उन्हें रनिंग मशीन और लाइटनिंग बोल्ट के नाम से भी जाना जाता है। उन्होंने अपने करियर की शुरुआत 2001 के हाईस्कूल प्रतियोगिता में 200 मीटर रेस से रजत पदक जीतकर की थी। साल 2009 में बर्लिन में 100 मीटर के लिए 9 पॉइंट 58 सेकंड और 200 मीटर की रेस 19 पॉइंट 9 सेकंड में खत्म करके उसैन बोल्ट ने विश्व

रिकॉर्ड हासिल किया जो आज की भी उन्ही के नाम पर है।वह 11 बार विश्व चौंपियन रह चुके हैं जिसमें उन्होंने तीन ओलंपिक में दो लंदन ओलंपिक जीते है। और आप सभी को जानकर हैरानी होगी कि उनकी पहली पसंद धावक बनना नहीं बल्कि क्रिकेट थी। जब वह बॉलिंग करते थे तो उनके कोच ने उन्हें पहचाना कि वह शानदार धावक बन सकते हैं। बोल्ट पहले धावक हैं जिन्होंने 100 मीटर और 200 मीटर में दोनों रेस जीती थी और इतना ही नहीं सपरीटिंग में 6 स्वर्ण जीतने वाले पहले धावक बने रहे हैं और सबसे शानदार बात यह है कि वह मात्र 9 पॉइंट 58 सेकंड में 100 मीटर भाग लेते हैं। आखिरी बार बोर्ड 11 अगस्त 2017 में लंदन प्रतियोगिता में दौड़ी थे, पर वह अंतिम रेस जीत नहीं सके... खेल के हार में भी जीतने का अर्थ होता है अगर खिलाड़ी को खुद पर विश्वास होता है।

– शिवम गुप्ता, बीएजेएमसी, प्रथम वर्ष

आरक्षण एक गंभीर समस्या

आरक्षण एक ऐसा काननू है जो पिछड़े वर्ग के लोगों को सुरक्षित बनाता है। तथा उन्हें हर क्षेत्र मे सहायता प्रदान कराता है, वैसे तो भारतीय संविधान में समानता का अधिकार हम सभी को है पर आरक्षण एक ऐसा काननू है, जो पिछड़ी जाति लोगों को विशेष रूप से सहायता प्रदान करता हैं। आरक्षण आज से नहीं बल्कि लम्बे समय से चला आ रहा है। ये आरक्षण आखिरकार बनाया किस लिए था? पिछड़े वर्ग को आगे लाने के लिए लेकिन आज वो लोग भी इसका फायदा उठा रहे है, जिन्हें इसकी कोई ज़रूरत नहीं है। इसकी वजह से नामंकित छात्र और श्रमिकों की गुणवत्ता पर भारी असर देखा जाता है। यह समाज में जाति आधारित धारण को खत्म करने के बजाए इसे प्रचारित करने के काम करता है, इसकी वजह से नौकरी प्राप्त करने में भी योग्य व्यक्ति को समस्यांए होती है। जब भी इसे हटाने की बात की जाती है तो लोग हिंसा और दंगो जैसी चीजों को बढ़ावा देने लग जाते हैं। हम ये जानते है की इसे एकदम से हटाया तो नहीं जा सकता पर धीरे–धीरे कम तो किया जा सकता है ताकि जिन्हें सही में इसकी ज़रूरत है उन्हें ही इसका फ़ायदा मिले अगर देखा जाए तो आज के समय में आरक्षण हमारे देश में सबसे बड़ी समस्या में से एक है। सरकार को एक विश्लेषण करना

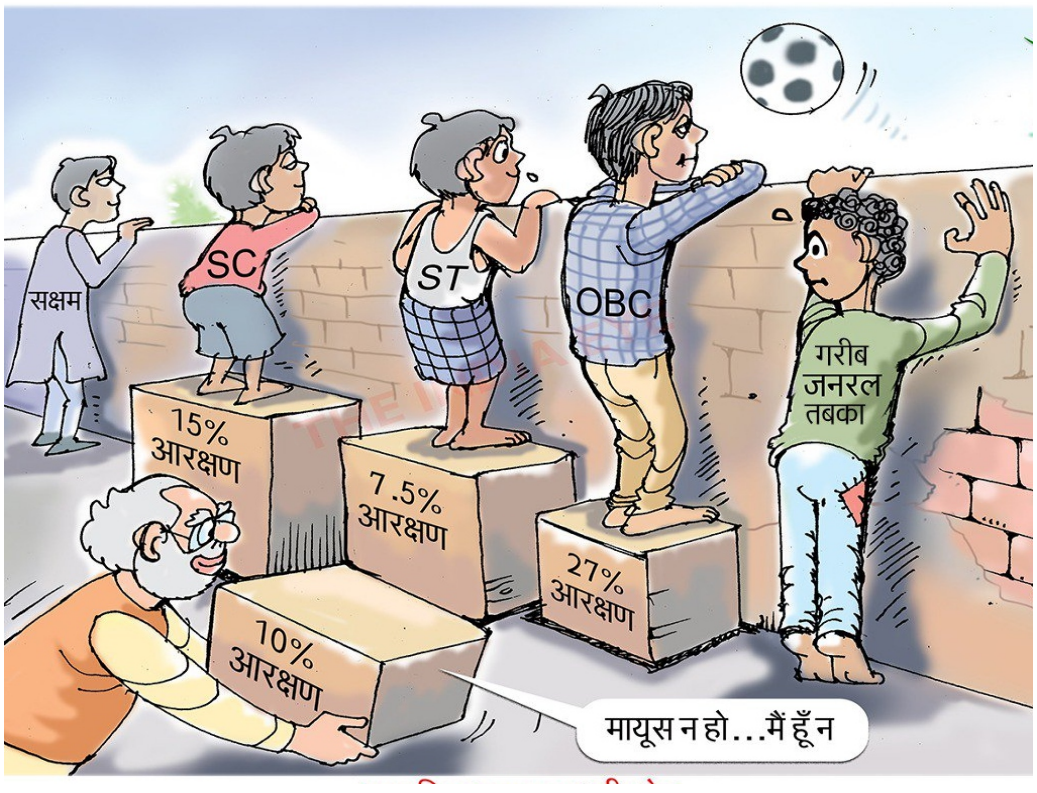

चाहिए जिससे सभी की समस्या का समान रूप से हल निकले और आरक्षण का सही मायने में उपयोग हो सके।
—अनिशा यादव, बीएजेएमसी, प्रथम वर्ष

हृदय रोग

विश्व स्वास्थ्य संगठन के मुताबिक भारत के शहरों में रहने वाले 12: और गांव में रहने वाले 8: लोगों को हृदय की कोई ना कोई बीमारी है। भारत में होने वाली कुल मौतों में से 28: की वजह भी हृदय रोग है और हर साल भारत में 20 लाख से ज्यादा लोग हार्ट अटैक से मर जाते हैं। पिछले 2 साल में कोविड से हमारे देश में सवा 5 लाख लोग मरे जबकि हार्ट अटैक से हर साल 20 लाख लोग मर जाते हैं, इसके बावजूद हमारे देश में कोविड को बहुत गंभीरता से लिया जाता है लेकिन हार्ट अटैक की कोई बात नहीं करता पिछले 20 वर्षों में भारत में हृदय रोगों के मामले 30: तक बढ़ गए हैं और इसके लिए सबसे ज्यादा जिम्मेदार है हाई ब्लड प्रेशर, धूम्रपान, शराब पीना और ज्यादा जंक फूड खाना इसके अलावा अब तनाव भी दिल की बीमारियों की एक बहुत बड़ी वजह बनता जा रहा है। भारत में 2019 में 7 महानगरों में हुए एक सर्वे से पता चला कि 30 से 40 वर्ष के 57: युवाओं में तनाव की वजह से दिल की बीमारियां हो रही है जबकि 30 से 40 वर्ष के 55: युवा 7 घंटे से भी कम नींद ले रहे हैं और यह भी इसकी बड़ी वजह है। आपको रोजाना 8 से 9 घंटे की नींद लेनी चाहिए। अत्यधिक चिंता या तनाव न लें।

—आकांक्षा राय, बीएजेएमसी, प्रथम वर्ष

BASICS OF MEDIA

Control Room. A room adjacent to the studio in which the director, the technical director, the audio engineer, and sometimes the lighting director perform their various production functions

•••

Master Control . Nerve center for all telecasts. Controls the program input, storage, and retrieval for on-the-air telecasts. Also oversees technical quality of all program material.

•••

Broadband: A high-bandwidth standard for sending information (voice, data, video, and audio) simultaneously over fiber-optic cables

•••

Grayscale: A scale indicating intermediate steps from TV white to TV black. Usually measured with a nine- or seven-step scale.

•••

Demographics: Audience research factors concerned with such data as age, gender, marital status, and income.

•••

Process Message: The message actually received by the viewer in the process of watching a television program.

•••

To Be Continued In Next Issue-

Compilation:
Parul Arora

संपादक की कलम से

होली पर्व के साथ भक्त प्रह्लाद की कथा का क्या है संबंध?

भारत में प्रत्येक पर्व–त्योहार के साथ कोई प्रेरक धार्मिक प्रसंग जुड़ा हुआ है। होली पर्व भले खुशियों और उल्लास से परिपूर्ण त्योहार हो लेकिन यह पर्व भी हमें सीख देता है कि ईश्वर में विश्वास करते हुए बुराइयों से लड़ना चाहिए। होली का पर्व हमें सभी कड़वी बातों को भुला कर गले लगने की सीख भी देता है। होली पर्व के साथ भक्त प्रह्लाद की कथा का भी बहुत गहरा संबंध हैं। आइये जानते हैं कैसे ईश्वर में अटूट विश्वास आपको विजेता बनाता है। एक बार की बात है। दैत्यराज एवं पुरोहित सहित राजकुमार, सब लोग एक ही साथ सभा में पहुंचे और सबका यथोचित स्वागत अभिवादन आदि हुआ। प्रह्लाद जी ने पिता के चरणों में प्रणाम किया। दैत्यराज ने उनको आशीर्वाद दे अपने आसन पर बैठने की आज्ञा दी। राजसभा ठसाठस भरी थी, हिरण्यकशिपु की राजसभा समस्त ऐश्वर्य की मूर्तिमान छटा थी, परंतु दैत्यराज की उदासीनता से सारी की सारी सभा उदासीन सी प्रतीत हो रही थी। भावी शोक की छाया मानो सबके हृदयों पर पड़ रही थी। सारे सभासद चुपचाप बैठे थे, कोई किसी से कुछ भी कहता सुनता नहीं था।

राजसभा शांत थी, दैत्यराज भी चुपचाप बैठे थे, इसी बीच में दैत्य गुरुओं ने पाठशाला में छात्रों को प्रह्लाद द्वारा दी जाने वाली हरिभक्ति रूपी राजद्रोही वक्तृताओं का समाचार सुनाया। दैत्यराज का चित्त ब्रह्मशाप के प्रभाव से पहले से ही भय और शोक से संतप्त हो रहा था। अतः जैसे ही उसने गुरुवरों के मुख से प्रह्लाद की बातें सुनीं, वैसे ही उसके शरीर में आग सी लग गयी। उसने क्रोधपूर्ण विकराल नेत्रों से प्रह्लाद की ओर देखा और कहा रे दुष्ट, क्या अभी तक तेरी मूर्खता नहीं गयी? क्या अब भी अपनी दुष्टता छोड़कर मेरी आज्ञा का पालन नहीं करेगा? मेरा यह अंतिम आदेश है कि तीनों लोक का एकमात्र मैं ही स्वामी हूं, इसलिए तू मुझको ही ईश्वर मान और मेरी ही पूजा कर, उस दुष्ट शत्रु गोविन्द का नाम छोड़ दे। दैत्यराज के वचन समाप्त होते ही राजपुरोहितों ने भी उनकी ही हां में हां मिला दी। पिता एवं पुरोहित जी के वचन सुनकर परम भागवत प्रह्लाद जी हंसते हुए कहने लगे– बड़े आश्चर्य की बात है कि वेद वेदांत के जानने वाले विद्वान ब्राह्मण, जिनको सारा संसार आदर की दृष्टि से देखता और पूजता है वे भी भगवान की माया से मोहित हो धृष्टता के साथ अभिमान के साथ इस प्रकार की अनर्गल बातें कहते हैं।

प्रह्लाद जी के निर्भीक और ओजस्वी वचनों को सुनकर दैत्यराज के शरीर में आग लग गयी। क्रोध के मारे उसके सारे अंग कांपने लगे और वह तिरछी नजर से प्रह्लाद की ओर देखता हुआ बोला, रे दुष्ट राजकुमार, बता जिसकी तू इनती प्रशंसा करता है वह तेरा विष्णु है कहां? यदि तेरा विष्णु सर्वव्यापी है तो क्या इस राजसभा में भी है? यदि है तो दिखला कहां है? यदि नहीं दिखलाता तो अब तेरा अंत समय आ गया। अब तक हमने तुझको अपना सुपुत्र मानकर अपने हाथों वध करना उचित नहीं समझा था, किंतु अब ऐसा प्रतीत होता है कि तेरी मृत्यु हमारे ही हाथ है। शीघ्र बतला और दिखला तेरा विष्णु कहां है? मेरी आज्ञा का उल्लंघन करने वाले तुझको मैं अभी यमलोक पहुंचाता हूं। तू किसके बल पर निडर हो कर मेरी आज्ञा का उल्लंघन कर रहा है?

प्रह्लाद जी बोले, हे महाराज जिन्होंने ब्रह्मा से लेकर एक तिनके तक समस्त जगत को अपने वश में कर रखा है। वे भगवान ही मेरे बल हैं, मेरे ही नहीं आपके और अन्य सभी के बल भी वे ही हैं। वे ही महापराक्रमी भगवान ईश्वर हैं, काल हैं और ओज हैं, वे ही साहस, सत्व, बल, इन्द्रिय और आत्मा हैं, वे ही तीनों गुणों के स्वामी अपनी परम शक्ति से विश्व की सृष्टि, पालन और संहार करते हैं। आप अपने इस आसुरी भाव को छोड़कर सबमें समभाव परमात्मा को देखिये। फिर आपको पता लगेगा कि आपका ही क्या किसी का भी कोई शत्रु नहीं है।

प्रह्लाद के वचनों को सुनकर हिरण्यकशिपु क्रोध से अधीर हो उठा और बोला, रे मन्दभागी अब निश्चय ही तेरे मरने की इच्छा है। अच्छा तू कह रहा है कि विष्णु इस सभा में है। क्या इस सामने वाले खम्भे में भी है, यदि है तो जल्दी दिखला, नहीं तो अब हम तेरा सिर इसी तलवार से धड़ से अलग करते हैं। प्रह्लाद जी बोले, पिताजी आप शांत हों, क्रोध न करें। मैंने मिथ्या नहीं कहा, देखिये, मुझे तो इस खम्भे में भी वे स्पष्ट दिखलायी पड़ते हैं। यह सुनकर दैत्यराज हिरण्यकशिपु राजसिंहासन से सहसा कूद पड़ा और क्रोध के आवेश में प्रह्लाद जी को कटु वचन कहता हुआ खड्ग लेकर रत्नों एवं मोतियों से जड़े सामने के खम्भे की ओर लपक कर उस पर बड़े जोर से एक ऐसा प्रहार किया कि जिससे न केवल राजसभा ही बल्कि सारा भूमण्डल डगमगा गया। मुष्टि प्रहार से सहसा भूमण्डल में भारी भूकंप–सा आ गया। तभी दैत्यराज ने सहसा खम्भे को फूटते हुए देखा। अपने भक्त प्रह्लाद के वचनों को और अपनी सर्वव्यापकता को प्रत्यक्ष स्पष्ट सिद्ध करने के लिए भगवान श्रीहरि सभा के बीच स्तम्भ के भीतर से प्रकट हो गये।

Crime Through Social Media

"Cyber bullies can hide behind a mask of anonymity online, and do not need direct physical access to their victims to do unimaginable harm."

—Anna Maria Chavez

The term cyber is a prefix which denotes a relationship with IT (information and technology), in other words, anything related to computers such internets, cloud storage, etc. falls under the category of cyber. Whereas the term crime refers to an illegal act which causes harm either to person physically, mentally or in any other way; or it harms the reputation of an individual. When these two terms cyber and crime meets and forms a single term "cybercrime" it is deadliest combination. Now-a-days cybercrime is the most reported crime in the country and we often see that not only teenagers but people of almost all age groups are present and connected on social media. People usually use

social media to share their pictures, videos, thoughts, wishes, etc. with the friends staying far away and to get in touch with their friends with whom they have lost their touch years back and this is the purpose for which it is meant. But the people with evil mind anyhow manage to find that how they can misuse it and do the mischief. The people who either put spam comments or comments defaming others on social media or create fake accounts or follows any person or texts any person uselessly for the purpose of fun, but they seriously don't know that they are committing serious crimes and can be prosecuted and punished under either the Indian Penal

Code, 1860; or the Criminal Procedure Code, or; the Information Technology Act, 2000; or under any other law as per circumstances and facts of the case. "The internet is becoming the town square for the global village of tomorrow."- Bill Gates.

-Ronika, BA(JMC)

TECNIA MAKES ME INDEPENDENT

Confidence boosted, skill set enhanced here I am sharing my experience as a outside Delhi student. It's my very first time leaving my hometown 'Rourkela' and going to India's capital city 'Delhi' to study. I would totally say my whole life changed after coming here. Everything was new for me new college new city, unknown roads, unknown people. I shifted in one of the pg nearby my college said goodbye to my parents and made up my mind that now I have to do everything by myself. 1st December 2021 first day of college going to college all by myself by remembering landmarks seeing all the new faces with all the excitement and fear in heart something just hit me if I will ever fit in this big city to be honest I was scared

too if I will be able to mix up with students teachers but slowly I started getting mix up with people, teachers everyone just felt homely. I will not lie even after feeling homely I felt homesick there was a time when I just want to go back to home badly because I got sick very badly for 2-3 days even after being so weak I had to do all my works by myself by not being my side and that moment reality hit me like this is what life is all about with all the pain you have to get up do work and go with the flow no one is going to be by your side always and this is how I enter into my independent stage. But I would say this is necessary getting out of home is necessary, doing everything by you is necessary, knowing the reality of world is necessary and for this the rule is simple no pain no gain. To get somewhere, it is necessary to get out of somewhere. Best make a cut for it at the right time, else you will get anxious and doubt will start creeping in and this how Tecnia makes me independent.

-Gaytri Pradhan,2nd Year, BA(JMC)

क्रोम ब्राउज़र को तुरंत कर लें अपडेट, सरकार ने दी चेतावनी

भारत सरकार के आईटी मंत्रालय की इंडियन कंप्यूटर इमरजेंसी रिस्पांस टीम (सीईआरटी–इन) ने गूगल क्रोम यूजर्स के लिए बेहद गंभीर चेतावनी जारी की है। जो उपयोगकर्ता 100.0.4896.88 से पहले के ब्राउज़र संस्करण का उपयोग कर रहे हैं, उन्हें एक चेतावनी दिखाई देगी। चेतावनी के अनुसार, ळववहसम क्रोम में विभिन्न कमजोरियां हैं जिनका दुरुपयोग मनमाने कोड को निष्पादित करने और लक्षित प्रणाली पर संवेदनशील जानकारी तक पहुंच प्राप्त करने के लिए किया जा सकता है। एडवाइजरी में आगे कहा गया है कि ष्स्टोरेज, बीएफसी कैश, रेगुलर एक्सप्रेशन, क्रोम ओएस शेल और टैब ग्रुप्स में फ्री के बाद उपयोग के कारण गूगल क्रोम में ये कमजोरियां मौजूद हैं, डेवलपर टूल्स में अपर्याप्त नीति प्रवर्तन, वी 8 में टाइप कन्फ्यूजन, कंपोजिटिंग में अनुचित कार्यान्वयन। सावधानीपूर्वक तैयार किए गए वेब अनुरोध भेजकर, एक दूरस्थ हमलावर इन कमजोरियों का फायदा उठा सकता है। एक दूरस्थ हमलावर मनमाना कोड निष्पादित कर सकता है और लक्षित सिस्टम पर संवेदनशील जानकारी तक पहुंच प्राप्त कर सकता है यदि इन कमजोरियों का सफलतापूर्वक शोषण किया जाता है। ब्त्ज्–प्द अनुशंसा करता है कि ळववहसम बैतवउम उपयोगकर्ता धोखाधड़ी से बचने के लिए संस्करण 100.0.4896.88 पर अपडेट करें। उपरोक्त संस्करण इस सप्ताह की शुरुआत में टेक दिग्गज द्वारा जारी किया गया था और इसमें कई मरम्मत और उन्नयन शामिल हैं।

सीईआरटी–इन के अनुसार, ळववहसम क्रोम ओएस में कई कमजोरियों का पता चला है, जो एक दूरस्थ हमलावर को लक्षित सिस्टम पर मनमाने कोड को निष्पादित करने की अनुमति दे सकता है। QuickAnswersUiController] CloseQuickAnswersView] और सुरक्षा में हीप–यूज़–आफ्टर–फ्री के कारण, तकनीकी दिग्गज के ऑपरेटिंग सिस्टम में कमजोरियाँ मौजूद हैं।

–यंगस्टर ब्यूरो

हनुमानजी ने ब्रह्मास्त्र की मर्यादा का सम्मान क्यों रखा था?

मेघनाद और श्रीहनुमान जी के मध्य विकराल युद्ध आरम्भ हो गया। दोनों लड़ते हुए ऐसे प्रतीत हो रहे थे, मानो कोई दो गजराज भिड़ पड़े हों। दोनों के पाँव धरती को अथाह बल से रगड़ रहे थे। और वाटिका में उस स्थान का घास मानो किसी चटनी की भाँति मसला जा चुका था। धूल उड़ कर आसमान को छूने जा पहुँची थी। ऐसा दंगल था, कि त्रिलोकी के समस्त गण इसी दृश्य के आधीन हो मूर्त से बने साक्षी हो चले थे। मेघनाद ने अपने समस्त माया व प्रपँच अपना लिए, लेकिन श्रीहनुमान जी हैं, कि उससे जीते ही नहीं जा पा रहे–

'उठि बहोरि कीन्हिसि बहु माया।
जीति न जाइ प्रभंजन जाया।।'

मेघनाद ने देखा, कि यह कपि तो बड़ा ही बलवान है। मेरे किसी भी शस्त्र को यह पल भर में ही काट डाल रहा है। तब उसने सोचा, कि अवश्य ही मुझे अब ब्रह्मास्त्र का प्रयोग करना चाहिए। ब्रह्मास्त्र के प्रयोग के क्या लाभ होंगे, और क्या हानियां होंगी, यह विचारे बिना ही उसने ब्रह्मास्त्र का संधान कर दिया। श्रीहनुमान जी ने देखा, कि मेघनाद ने ब्रह्मास्त्र का संधान करके अच्छा नहीं किया। कारण कि ऐसा नहीं कि हम ब्रह्मास्त्र का प्रतिकार नहीं सकते। लेकिन ऐसे करने से हमारे बल का तो हो सकता है, कि डंका बज उठे, लेकिन इससे ब्रह्मास्त्र की महिमा को ठेस पहुँचेगी। वैसे भी ब्रह्मा जी तो सृष्टि के रचयिता हैं। वे हम सबके पिता हैं। हम कितने भी बड़े हो जायें। लेकिन क्या अपने पिता से बड़े हो सकते हैं? नहीं, कभी भी नहीं। और उनके अस्त्र का संधान हो, तो उसका प्रतिकार व अपमान तो किसी भी स्तर पर उचित नहीं। निश्चित ही मुझे ब्रह्मास्त्र की मर्यादा का सम्मान रखना ही होगा–

'ब्रह्म अस्त्र तेहि साँधा कपि मन कीन्ह बिचार।
जौं न ब्रह्मसर मानउँ महिमा मिटइ अपार।।'

बस फिर क्या था। मेघनाद ने ब्रह्मास्त्र का संधान कर दिया। और श्रीहनुमान जी मूर्छित होकर, पेड़ से धरा पर गिर पड़े। श्रीहनुमान जी नीचे क्या गिरे। राक्षसों की तो श्वाँस में श्वाँस आई। लगा कि उनके चारों ओर मँडराती मृत्यु के ताँडव को मानों विराम लगा हो। लेकिन सबने श्रीहनुमान जी को भला क्या, यूँ ही कोई साधारण वानर समझ रखा था? ऐसा थोड़ी था, कि श्रीहनुमान जी अब गिर रहे हैं, तो उनके गिरते–गिरते बस गिर ही जाना होगा। जान–माल की हानि से भी पूर्णतः बच जाना होगा। जी नहीं! श्रीहनुमान जी तो ऐसे वीर बलवान व सजग हैं, कि वे गिरते–गिरते भी कितने ही राक्षसों को अपने नीचे दबा कर मार डालते हैं। जब मेघनाद ने देखा कि श्रीहनुमान जी मूर्छित होकर, पेड़ से नीचे गिर गए हैं। तो वह उन्हें नागपाश में बाँधकर अपने साथ ले चलता है–

'ब्रह्मबान कपि कहुँ तेहिं मारा।
परतिहुँ बार कटकु संघारा।।
तेहिं देखा कपि मुरुछित भयऊ।
नागपास बाँधेसि लै गयऊ।।'

यह दृश्य देखकर निश्चित ही साधारण बुद्धि का स्वामी यह सोच लेता है, कि हाँ, श्रीहनुमान जी नागपाश में बँध गए होंगे। लेकिन ऐसा नहीं है। भगवान शंकर जी भी जब माता पार्वती जी को 'श्रीराम कथा' का रसपान करवा रहे हैं, तो वे यही बात कह रहे हैं, कि भला ऐसे कैसे संभव हो सकता है, कि श्रीहनुमान जी भी किसी बँधन में बँध जायें। कारण कि जिन प्रभु के पावन नाम के स्मरण से, संसार के ज्ञानी नर–नारियां, संपूर्ण भव सागर के बँधन काट डालते हों, भला उनका ऐसा प्रिय शिष्य, किसी बँधन में भला कैसे बँध सकता है। निश्चित ही यह सँभव ही नहीं है। निश्चित ही वास्तविकता यह है, कि श्रीहनुमान जी को बाँधा नहीं गया, अपितु लीला रचने हेतु, श्रीहनुमान जी ने ही, स्वयं को नागपाश में बँधना स्वीकार कर लिया–

'जासु नाम जपि सुनहु भवानी।
भव बंधन काटहिं नर ग्यानी।।
तासु दूत कि बंध तरु आवा।
प्रभु कारज लगि कपिहिं बँधावा।।'

श्रीहनुमान जी का बँधना सुन पूरे लंका नगरी में कौतूहल मच गया। सभी राक्षस गण श्रीहनुमान जी को, यूँ बँधा देखने के लिए रावण की सभा में उपस्थित हो रहे हैं। श्रीहनुमान जी ने भी रावण की सभा देखी, तो बस देखते ही रह गए। कारण कि रावण की सभा का वैभव ही ऐसा है, कि कुछ कहा ही नहीं जा सकता है। वहाँ रावण को छोड़कर सभी सभासद दास की ही भूमिका में हैं। देवता और दिक्पाल हाथ जोड़कर रावण की भौं ताक रहे हैं। हर किसी का बस यही प्रयास है, कि काल बिगड़ता है, तो बिगड़ जाये। लेकिन रावण न बिगड़ने पाये। क्योंकि रावण अगर प्रतिकूल हो गया। तो मानों, कि अमुक जीव का भाग्य ही उससे रूठ गया। समझना कि उसकी श्वाँसों को उसकी छाती से अब कोई सरोकार नहीं रहा। लेकिन इन सब से परे, श्रीहनुमान जी पूर्णतः निशंख व अखण्ड़ भाव से ऐसे खड़े हैं, जैसे सर्पों के झुण्ड में गरुड़ महाराज निर्भय खड़े होते हैं–

'कर जोरें सुर दिसिप बिनीता।
भृकुटि बिलोकत सकल सभीता।।
देखि प्रताप न कपि मन संका।
जिमि अहिगन महुँ गरुड़ असंका।।'

–यंगस्टर ब्यूरो

Vol. 16 **No.** 3
RNI No.: DEL/BIL/2004/14598
Publisher: Ram Kailsah Gupta on behalf of Tecnia Institute of Advanced Studies, 3 PSP, Madhuban Chowk, Rohini, Delhi-85; **Printer:** Ramesh Chander Dogra; **Printed at:** Dogra Printing Press, 17/69, Jhan Singh Nagar, Anand Parbat, New Delhi-5
Editor: Bal krishna Mishra responsible for selection of News under PRB Act.
All rights reserved.
Sub Editor: Karan Singh

IMPORTANT QUOTES

"The opposite of a correct statement is a false statement. The opposite of a profound truth may well be another profound truth."

Niels Bohr

•••

"In science one tries to tell people, in such a way as to be understood by everyone, something that no one ever knew before. But in poetry, it's the exact opposite."

Paul Dirac

•••

"Anyone who considers arithmetical methods of producing random digits is, of course, in a state of sin."

John von Neumann

•••

"It is unbecoming for young men to utter maxims."

Aristotle

•••

"Grove giveth and Gates taketh away."

Bob Metcalfe

•••

Compilation: Vinayak

WINNERS v/s LOOSERS Part-90

Winners use hard arguments but soft words; Losers use soft arguments but hard words.

•••

Winners stand firm on values but compromise on petty things; Losers stand firm on petty things but compromise on values.

•••

Winners follow the philosophy of empathy: "Don't do to others what you would, not want them to do to you"; Losers follow the philosophy, "Do it to others before they do it to you."

•••

Winners make it happen; Losers let it happen.

•••

The Winner is always part of the answer; The Loser is always part of the problem.

•••

The Winner always has a program; The Loser always has an excuse.

•••

To Be Continued In Next Issue-

Compilation: Anamika Pandey

All Students and Faculty are welcome to give any Article, Feature & Write-up along with their Views & Feedback at: **youngstertias@gmail.com**